परमात्म ऊर्जा

जब जान लिया और पहचान लिया, मान लिया कि सभी सम्बन्ध एक साथ हैं, दूसरा ना कोई, तो उसमें चलने में क्या मुश्किल है? साथ क्यों छोड़ते हो? सीता का साथ क्यों छूटा? कारण - लकीर का उल्लंघन किया। यह चन्द्रवंशी सीता का काम है, लक्ष्मी का नहीं। तो मर्यादा के लकीर के बाहर बुद्धि ज़रा भी ना जाए। नहीं तो चन्द्रवंशी बनेंगे। बुद्धि रूपी पांव मर्यादा की लकीर से संकल्प व स्वप्न में भी बाहर निकलता है तो अपने को चन्द्रवंशी सीता समझना चाहिए, सूर्यवंशी लक्ष्मी नहीं। सूर्यवंशी अर्थात् शूरवीर। जो शूरवीर होता है वह कब कोई के वश नहीं होता है। तो सदा साथ रखने के लिए अपने को मर्यादा की लकीर के अन्दर रखो,लकीर के बाहर न निकलो। बाहर निकलते हो तो फकीर बन जाते हो। फिर मांगते रहते हो- यह मदद मिले, यह सैलवेशन मिले तो यह हो सकता है। मंगता हुआ ना! फकीर बनने का अर्थ ही है -हेल्थ, वेल्टा गंवा देते हो, इसलिए फकीर बन जाते हो। तो ना लकीर को पार करो ना फकीर बनो। लकीर के अन्दर रहने से मायाजीत बन सकते हो। लकीर को पार करने से माया से हार खा लेते हो। इसलिए सदा हेल्दी, वेल्दी, हैप्पी और होली बनो? चेक करो कि इन चारों में से आज किसी बात की कमी रही, आज हेल्थ ठीक है, वेल्थ है, हैप्पी है, होली है, न है तो क्यों? उस रोग को जानकर फौरन ही उसकी दवाई करो और तो सभी प्रकार की दवाई मिल चुकी हैं। सभी प्राप्तियां हैं। तो सभी प्राप्ति होते भी समय पर क्यों नहीं कर पाते हो? समय के बाद स्मृति में क्यों आते हो? यह कमज़ोरी है जो समय पर काम नहीं करते। समय के बाद भी करते हो तो समय तो बीत जाता है ना। समय पर सभी स्मृति रहे, उसके लिए अपनी बुद्धि इतनी विशाल व नॉलेजफुल नहीं बनी है। तो फिर कोई सहारा चाहता है, वह सहारा सदा साथ रखो तो कब हार नहीं होगी।

तो कब भी अपने को रोगी ना बनाना ज़रा भी किसी प्रकार का रोग प्रवेश हो गया तो एक व्याधि फिर अनेक व्याधियों को लाती है। एक को ही खत्म कर दिया तो अनेक आयेंगी ही नहीं। एक में अलबेले रहते हो, हल्की बात समझते हो, लेकिन वर्तमान समय के प्रमाण हल्दी व्याधि भी बड़ी व्याधि है। इसलिए हल्के को ही बड़ा समझ वहाँ ही खत्म कर दो तो आत्मा कब निर्बल नहीं होगी, हेल्दी रहेगी।

कथा सरिता

सबसे बड़ा कर्त्तव्य- परोपकार

बात उस समय की है जब हमारे देश में मुगलों का साम्राज्य था। राजस्थान के प्रसिद्ध शहर जयपुर में एक व्यक्ति रहता था। एक दिन जब वह व्यक्ति अपने काम में लगा हुआ था, तो उसके पास एक युवक आया और कहने लगा महोदय, ये लीजिए अपने बीस हज़ार रूपये आपने बुरे समय में मेरी सहायता की थी और अब मैं इन्हें लौटाने में सक्षम हूँ। अतः कृपया आप ये पैसे रख लीजिए। मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ।

यह सुनकर वह व्यक्ति ध्यानपूर्वक युवक को देखते हुए बोले- माफ करना, लेकिन मैंने तो आपको पहचाना नहीं और न ही मुझे ये याद आ रहा है कि मैंने कभी कोई पैसे आपके दिये थे।

यह सुनकर युवक आश्चर्यचकित होते हुए बोला- आप याद कीजिए एक बार आप चिकित्सालय में गए थे, मैं बहुत बीमार था। मेरे पास पैसे नहीं थे। डॉक्टर ने तुरन्त बीस हज़ार रूपये जमा करने के लिए कहा था। मैं बहुत हताश, परेशान था, क्योंकि अगर समय रहते पैसे जमा नहीं होते तो मेरा जीवित रहना सम्भव नहीं था। उस समय आपने ही पैसे जमा करके मेरे प्राणों की रक्षा की थी। आप कहते हैं कि मुझे तो याद ही नहीं है।

यह सुनकर व्यक्ति अपने बीते दिनों के बारे में सोचने लगा। और थोड़ी ही देर में उसे याद भी आ गया कि ऐसी घटना हुई थी और मैंने रूपये दिए थे। लेकिन कुछ देर सोचने के बाद वह बोला- मित्र, हाँ मुझे याद आ गया कि मैंने रूपये दिए थे। परन्तु यह तो मनुष्य का स्वाभाविक धर्म, कर्त्तव्य है कि वह मुसीबत में पड़े हुए प्राणी की सहायता करे। अतः अब आप इन पैसों को अपने पास ही रखें। हाँ, इतना ज़रूर करें कि अगर आपको भी कोई ज़रूरतमंद व्यक्ति मिले तो ये रूपए आप उसको दे दें और अगर आपके पास भी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए तो आप भी उस व्यक्ति को यही कहें कि वह भी आगे इसी प्रकार किसी ज़रूरतमंद की सहायता करे। बस यही हमारा कर्त्तव्य है, धर्म है।

यह सुनकर वह युवक उनसे अत्यन्त प्रभावित हुआ और हकीकत में ही एक दिन उसे एक ज़रूरतमंद व्यक्ति मिला और उसने उन रूपयों में बीस हज़ार रूपये और मिलाकर उस व्यक्ति की मदद की और उसे भी वही सलाह दी जो उस व्यक्ति ने उसे दी थी। धीरे-धीरे ऐसे लोगों की बहुत बड़ी संख्या हो गई और बहुत सारे पैसे भी इकट्ठे हो गए फिर उन सबने एक चिकित्सालय का निर्माण किया। वहाँ पर आज भी निःशुल्क चिकित्सा प्रदान की जाती है।

सीख: इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि हम सबको निःस्वार्थ भाव से एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। यही सबसे बड़ा धर्म है।

कदमा-जमशेदपुर(झारखंड)। सेवाकेन्द्र पर बच्चों के लिए तीन दिवसीय 'लिटिल एंजेल' समर कैंप का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. संजू, डॉ. प्रत्युश तथा अन्य।

कोटा-कुन्हाडी(राज.)। मातृ दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी, ब्र.कु. गरिमा, एडिशनल कमिश्नर सुनीता डागा, लॉ कॉलेज की प्रिंसिपल एवं लायंस क्लब की अध्यक्षा डॉ. क्षिप्रा गुप्ता तथा अन्य।

मोकामा-बिहार। मातृ दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में नगर परिषद की उपसभापति श्रीमती नीतू देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा। साथ हैं ब्र.कु. रोशनी।

फतेहपुर-पूर्वी तांबेश्वर(उ.प्र.)। जिलाधिकारी रविंद्र सिंह को ज्ञानामृत व ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रियंका।

बहल-हरियाणा। दो दिवसीय निःशुल्क नशा मुक्ति मेडिसिन कैंप में थानाध्यक्ष जय भगवान शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला बहन। साथ हैं ब्र.कु पूनम, सरपंच साधुराम पनिहार, डॉ. ब्र.कु. रामकुमार तथा अन्य।

राजगीर-बिहार। पृथ्वी दिवस के अवसर पर आर.डी.एच. प्लस टू राजगीर स्कूल और उत्क्रमित मध्य विद्यालय गांधी आश्रम में बच्चों को आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर प्रकाश देने के पश्चात् प्रधानाध्यापिका इंदु सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

पिण्डवाड़ा-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के 'मेडिकल विंग' द्वारा जागरूकता सत्र के तहत स्थानीय जनजाति के लोगों को नशा मुक्त बनाने के लिए जागरूक किया गया। जिसमें 335 प्रतिभागियों ने भाग लिया।